

कक्षा 10 · हिंदी (पाठ्यक्रम 'अ') · क्षितिज भाग 2 · काव्य खंड

पाठ 1

सूरदास के पद

सूरसागर के 'भ्रमरगीत' से चार पद · NCERT क्षितिज भाग 2 · CBSE 2026-27

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी

भ्रमर = मधुकर = उद्धव

पाठ का मानचित्र (★ = परीक्षा के लिए सबसे महत्वपूर्ण)

पद 1: ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी ★★★
व्यंग्य: कमल का पत्ता, तेल की गगरी

पद 2: मन की मन ही माँझ रही ★★★
विरह में घी: योग-संदेश

गोपियाँ बनाम उद्धव का योग

पद 3: हमारैं हरि हारिल की लकरी ★★★
एकनिष्ठ प्रेम; योग = करुई ककरी

पद 4: हरि हैं राजनीति पढ़ि आए ★★★
राजधर्म: प्रजा न जाहि सताए

कवि परिचय

सूरदास (जन्म **1478**; एक मान्यता के अनुसार मथुरा के निकट **रुनकता (रेणुका क्षेत्र)**, दूसरी के अनुसार दिल्ली के पास **सीही**)। **महाप्रभु वल्लभाचार्य** के शिष्य और **अष्टछाप** के कवियों में सर्वाधिक प्रसिद्ध। मथुरा-वृंदावन के बीच **गऊघाट** पर रहते और **श्रीनाथ जी** के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे। निधन **1583** में **पारसौली** में। रचनाएँ: **सूरसागर** (सबसे लोकप्रिय), **साहित्य लहरी**, **सूर सारावली**। 'वात्सल्य' और 'शृंगार' के श्रेष्ठ कवि; भाषा: निखरी हुई ब्रजभाषा।

इस अध्याय में

1. पाठ परिचय, प्रसंग, चारों पदों का सार और भावार्थ
2. हर पद का शब्दार्थ, भावार्थ, काव्य-सौंदर्य (अलंकार सहित)
3. NCERT प्रश्न-अभ्यास पूरी तरह हल, अतिरिक्त प्रश्न
4. **CBSE बोर्ड प्रश्न 2024-2026, सभी हल**: काव्यांश, 2 अंक के प्रश्न
5. त्वरित दोहराव, अभ्यास A-G, 20 MCQ, 6 कथन-कारण, उत्तर, अंतिम-रात सारांश

रंग-संकेत

लाल = मुख्य शब्द **बैंगनी** = उप-शीर्षक **हरा** = उत्तर

★ **परीक्षा-सुझाव**: काव्य खंड में हर साल एक **काव्यांश (5 × 1 MCQ)** और **2-2 अंक के प्रश्न** आते हैं। 2024-26 के 16 प्रश्न-पत्रों में सूरदास के पदों से **14 प्रश्न** आए: इनमें 6 बार पूरा काव्यांश।

एक पंक्ति में: कृष्ण मथुरा जाकर स्वयं नहीं लौटे; उद्धव को योग का संदेश देकर भेजा। गोपियाँ प्रेम-मार्ग पर अडिग हैं; वे भ्रमर (मधुकर) के बहाने उद्धव पर व्यंग्य करती हैं और कृष्ण को राजधर्म याद दिलाती हैं।

1.1 पाठ परिचय: भ्रमरगीत का प्रसंग ★★

भ्रमरगीत क्या है?

- ये चारों पद **सूरसागर** के **भ्रमरगीत** प्रसंग से लिए गए हैं।
- कृष्ण** मथुरा जाने के बाद स्वयं लौटकर नहीं आए। उन्होंने अपने मित्र **उद्धव** के द्वारा गोपियों के पास संदेश भेजा।
- उद्धव ने **निर्गुण ब्रह्म** और **योग** का उपदेश देकर गोपियों की **विरह-वेदना** शांत करने का प्रयास किया।
- गोपियाँ **ज्ञान-मार्ग** की बजाय **प्रेम-मार्ग** (सगुण भक्ति) को पसंद करती थीं, इसलिए उन्हें उद्धव का **शुष्क (नीरस) संदेश** अच्छा नहीं लगा।
- तभी वहाँ एक **भौरा** आ पहुँचा। गोपियों ने **भ्रमर के बहाने** उद्धव पर **व्यंग्य-बाण** छोड़े। यहीं से 'भ्रमरगीत' का आरंभ होता है।

पात्र और संबोधन

शब्द	किसके लिए
ऊधौ / ऊधो	उद्धव (कृष्ण के मित्र, ज्ञानी, योग-संदेश वाहक)
मधुकर / भ्रमर	भौरा; गोपियों द्वारा उद्धव के लिए प्रयुक्त संबोधन
हरि, नंद-नंदन, कान्ह	श्रीकृष्ण
अबला, बिरहिनि	गोपियाँ (स्वयं के लिए)
'सूरदास' / 'सूर'	कवि की छाप (पद के अंत में कवि का नाम)

चारों पदों का सार

पद	मुख्य भाव
1. ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी	उद्धव को 'बड़भागी' कहकर व्यंग्य: वे कृष्ण के पास रहकर भी प्रेम से अछूते रहे, जैसे कमल का पत्ता जल में और तेल की गगरी पानी में। गोपियाँ स्वयं कृष्ण-प्रेम में ऐसे लिपटी हैं जैसे गुड़ से चींटी ।
2. मन की मन ही माँझ रही	मन की अभिलाषाएँ मन में ही रह गईं। कृष्ण के लौटने की आस में विरह सह रही थीं, पर योग-संदेश ने विरह की आग और भड़का दी। जिनसे रक्षा की आशा थी, वहीं से योग की धारा बह आई। कृष्ण ने मर्यादा नहीं रखी।
3. हमारैं हरि हारिल की लकरी	कृष्ण गोपियों के लिए हारिल की लकड़ी हैं। वे जागते-सोते, दिन-रात 'कान्ह-कान्ह' रटती हैं। योग उन्हें कड़वी ककड़ी और व्याधि लगता है; इसे उन्हें दो जिनका मन चकरी जैसा चंचल हो।
4. हरि हैं राजनीति पढ़ि आए	कृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है; पहले ही चतुर थे, अब ग्रंथ पढ़कर और चतुर हो गए। पहले के लोग परहित के लिए दौड़ते थे। गोपियाँ अपना चुराया हुआ मन वापस लेंगी। राजधर्म वही है जिसमें प्रजा न सताई जाए ।

★ **परीक्षा-सुझाव:** पहले पद में **व्यंग्य**, दूसरे में **विवशता और विरह**, तीसरे में **एकनिष्ठ प्रेम**, चौथे में **उलाहना और राजधर्म**। यह क्रम याद रखें; काव्यांश पहचानने में मदद करेगा।

लोकधर्मिता: अंतिम पद में गोपियों द्वारा कृष्ण को राजधर्म (प्रजा का हित) याद दिलाना सूरदास की **लोकधर्मिता** (जन-कल्याण की भावना) को दर्शाता है।

1.2 पद-दर-पद व्याख्या ★★★

पद 1

ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यों जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्खौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यों पागी।।

शब्दार्थ: बड़भागी = भाग्यवान; अपरस = अलिप्त, नीरस, अछूता; तगा = धागा, बंधन; अनुरागी = प्रेम करने वाला; पुरइनि पात = कमल का पत्ता; दागी = दाग, धब्बा; माहँ = में; गागरि = गगरी, मटकी; प्रीति-नदी = प्रेम की नदी; पाउँ = पैर; बोर्खौ = डुबोया; परागी = मुग्ध होना; भोरी = भोली; गुर चाँटी ज्यों पागी = जैसे चींटी गुड़ में लिपटती है।

भावार्थ: गोपियाँ उद्धव से **व्यंग्य** में कहती हैं: हे उद्धव! तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो, क्योंकि तुम प्रेम के धागे (बंधन) से बिलकुल अछूते रहे हो; तुम्हारा मन किसी के प्रेम में नहीं लगा। जैसे **कमल का पत्ता** जल के भीतर रहकर भी उस पर पानी का दाग (धब्बा) नहीं लगने देता, और जैसे **तेल से चुपड़ी गगरी** जल में रहकर भी अपने ऊपर पानी की एक बूँद नहीं ठहरने देती, वैसे ही तुम कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम से अछूते रहे। तुमने **प्रेम की नदी** में कभी पैर तक नहीं डुबोया और तुम्हारी दृष्टि कभी किसी के रूप पर मुग्ध नहीं हुई। सूरदास कहते हैं कि गोपियाँ कहती हैं: हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं, जो कृष्ण के प्रेम में वैसे ही लिपट गई हैं जैसे **चींटी गुड़ से** चिपट जाती है (और फिर छूट नहीं पाती)।

काव्य-सौंदर्य: (1) 'बड़भागी' में **व्यंग्य**: वास्तव में उद्धव **भाग्यहीन** हैं। (2) **दृष्टांत/उदाहरण**: कमल का पत्ता, तेल की गगरी। (3) **उपमा**: 'गुर चाँटी ज्यों पागी', 'ज्यों जल माहँ तेल की गागरि'। (4) **रूपक**: 'प्रीति-नदी', 'सनेह तगा'। (5)

अनुप्रास: 'पुरइनि पात', 'तुम हो'। (6) ब्रजभाषा, गेय पद शैली, **वियोग शृंगार**, माधुर्य गुण।

पद 2

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि आधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यों, मरजादा न लही।।

शब्दार्थ: माँझ = में, भीतर; पै = से, पास; अवधि = (लौटने की) निर्धारित अवधि; आधार = आधार; आवन = आगमन; बिथा = व्यथा; बिरहिनि = वियोग में जीने वाली; बिरह दही = विरह की आग में जल रही हैं; हुतीं = थीं; गुहारि = रक्षा के लिए पुकारना; जितहिं तैं = जहाँ से; उत = उधर, वहाँ; धार = योग की प्रबल धारा; धीर = धैर्य; मरजादा = मर्यादा, प्रतिष्ठा; न लही = नहीं रही, नहीं रखी।

भावार्थ: गोपियाँ कहती हैं: हे उद्धव! हमारे मन की बात (कृष्ण से मिलने और अपना प्रेम कहने की अभिलाषा) मन में ही रह गई। यह बात जाकर किससे कहें? यह कही भी नहीं जा सकती। कृष्ण के लौट आने की निश्चित **अवधि** का सहारा लेकर, उनके आने की आशा में हम अब तक तन-मन की व्यथा सहती आ रही थीं। पर अब तुम्हारे इन **योग-संदेशों** को सुन-सुनकर हम विरहिणियाँ विरह की आग में और भी जलने लगी हैं। जिधर से (कृष्ण से) हम रक्षा के लिए पुकार लगाना चाहती थीं, उधर से ही योग की प्रबल धारा बह आई (रक्षक ही दुख देने वाला बन गया)। सूरदास कहते हैं कि गोपियाँ कहती हैं: जब कृष्ण ने ही प्रेम की **मर्यादा** नहीं रखी, तो अब हम धैर्य क्यों धरें?

काव्य-सौंदर्य: (1) **अनुप्रास:** 'मन की मन', 'बिरहिनि बिरह', 'अवधि अधार आस आवन'। (2) **पुनरुक्ति प्रकाश:** 'सुनि-सुनि'। (3) 'उत तैं धार बही' में **लाक्षणिकता:** जहाँ से सहायता चाहिए थी, वहीं से विपत्ति आई। (4) गोपियों की **विवशता** और **विरह-वेदना** का मार्मिक चित्रण; वियोग शृंगार; ब्रजभाषा, गेयता।

★ **परीक्षा-सुझाव:** 'मरजादा न लही' पर बार-बार प्रश्न आता है: **कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं निभाई** (प्रेम के बदले प्रेम देने के स्थान पर योग भेजा)। 2026 (3/2/1) में पूछा गया: "मर्यादा का पालन किसने नहीं किया?"
उत्तर: **कृष्ण ने।**

पद 3

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी।
सु तो ब्याधि हमकों लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तो 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

शब्दार्थ: हारिल = एक पक्षी जो अपने पैरों में सदैव एक लकड़ी लिए रहता है, उसे छोड़ता नहीं; क्रम = कर्म; नंद-नंदन उर...पकरी = नंद के नंदन कृष्ण को हमने हृदय में बसाकर कसकर पकड़ा हुआ है; जकरी = रटती रहती हैं; करुई ककरी = कड़वी ककड़ी; सु = वह; ब्याधि = रोग, पीड़ा पहुँचाने वाली वस्तु; करी = भोगा; तिनहिं = उनको; मन चकरी = जिनका मन स्थिर नहीं रहता।

भावार्थ: गोपियाँ कहती हैं: हे उद्धव! हमारे लिए कृष्ण **हारिल पक्षी की लकड़ी** के समान हैं। जैसे हारिल पक्षी लकड़ी को पंजों में कसकर पकड़े रहता है, वैसे ही हमने मन, कर्म और वचन से नंद-नंदन कृष्ण को हृदय में दृढ़ता से पकड़ रखा है। जागते, सोते, सपने में, दिन-रात हम 'कान्ह-कान्ह' ही **रटती** रहती हैं। तुम्हारा योग सुनते ही ऐसा लगता है मानो **कड़वी ककड़ी** खा ली हो। तुम तो हमारे लिए ऐसा **रोग (व्याधि)** ले आए हो जिसे हमने न कभी देखा, न सुना और न भोगा। सूरदास कहते हैं कि गोपियाँ कहती हैं: यह योग तो उन्हें जाकर सौंपो जिनका मन **चकरी** (चकई, फिरकी) के समान चंचल और अस्थिर हो।

काव्य-सौंदर्य: (1) **रूपक:** 'हरि हारिल की लकरी' (कृष्ण = हारिल की लकड़ी)। (2) **उपमा:** 'ज्यों करुई ककरी'। (3) **अनुप्रास:** 'हमारैं हरि हारिल', 'करुई ककरी'। (4) **पुनरुक्ति प्रकाश:** 'कान्ह-कान्ह'। (5) योग को 'ब्याधि' कहना: **व्यंग्य**। (6) गोपियों का **एकनिष्ठ, अनन्य प्रेम**; ब्रजभाषा, गेयता।

यह भी जानें: हारिल पीली टाँगों वाला, हरे रंग का, कबूतर की जाति का पक्षी है (हरियल, हारीत, कॉमन ग्रीन पिज़न)। 'हारिल की लकड़ी' लोक में **मुहावरे** के रूप में प्रचलित है: किसी चीज़ को कभी न छोड़ना।

पद 4

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यों अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

शब्दार्थ: मधुकर = भौरा (उद्धव के लिए प्रयुक्त संबोधन); हुते = थे; पठाए = भेजा; आगे के = पहले के; पर हित = दूसरों के कल्याण के लिए; डोलत धाए = घूमते-फिरते थे; फेर = फिर से; पाइहैं = पा लेंगी; चलत = चलते समय; अनीति = अन्याय; आपुन = स्वयं।

भावार्थ: गोपियाँ आपस में और उद्धव से कहती हैं: अब तो कृष्ण **राजनीति** पढ़ आए हैं। मधुकर (उद्धव) की बातें सुनकर हमने सब बात समझ ली और सारे समाचार पा लिए। एक तो वे पहले से ही बहुत **चतुर** थे, अब गुरु से बड़े-बड़े ग्रंथ भी पढ़ लिए हैं। उनकी बुद्धि बढ़ गई है, यह तो इसी से जान लिया कि उन्होंने हमें **योग का संदेश** भेजा है। हे उद्धव! पहले के लोग भले थे, जो दूसरों के हित के लिए दौड़े-फिरते थे। अब हम अपना वह मन फिर से पा लेंगी, जिसे कृष्ण मथुरा जाते समय **चुराकर** ले गए थे। जो दूसरों को अन्याय से छुड़ाते हैं, वे स्वयं अन्याय क्यों करें? सूरदास कहते हैं: **राजधर्म** तो यही है कि प्रजा को सताया न जाए।

काव्य-सौंदर्य: (1) 'राजनीति पढ़ि आए' में **व्यंग्य** और **कटाक्ष**: राजनीति = चतुराई, छल-कपट। (2) **अनुप्रास**: 'पर हित', 'अनीति...अनीति'। (3) 'मधुकर' में **प्रतीक**: उद्धव। (4) अंतिम पंक्ति में **लोकधर्मिता** और नीति; उपालंभ (उलाहना) शैली; ब्रजभाषा।

X यह गलती न करें: 'राजनीति' का अर्थ यहाँ **शासन चलाने की विद्या नहीं**, बल्कि **चतुराई और छलपूर्ण व्यवहार** है (CBSE 2025: "राजनीति का प्रयोग: चतुराई के अर्थ में"; "कृष्ण को राजनीतिज्ञ क्यों कहा गया: प्रेम में छल-कपटपूर्ण व्यवहार करने के कारण")।

1.3 महत्त्वपूर्ण बिंदु, अलंकार और भाषा ★★

उद्धव की तुलना किससे?

उपमान	समानता
कमल का पत्ता (पुरइनि पात)	जल में रहकर भी जल का दाग नहीं लगता
तेल की गगरी (गागरि)	जल में रहकर भी एक बूँद नहीं ठहरती
मधुकर (भौरा)	रस लेकर उड़ जाने वाला, चंचल

X यह गलती न करें: 'हारिल की लकड़ी' से **उद्धव की नहीं**, **कृष्ण** की तुलना है (गोपियों के लिए कृष्ण = हारिल की लकड़ी)। CBSE 2024 (3/3/1): "उद्धव की तुलना किससे **नहीं** की गई?" उत्तर: हारिल पक्षी की लकड़ी।

गोपियों के उलाहने (व्यंग्य)

- उद्धव को 'बड़भागी' कहना, जबकि वे प्रेम से वंचित (भाग्यहीन) हैं।
- प्रेम-नदी में पैर तक न डुबोना; दृष्टि किसी रूप पर न रीझना।
- योग को कड़वी ककड़ी और 'व्याधि' बताना।
- योग उन्हें दो जिनका मन चकरी जैसा अस्थिर है।
- कृष्ण ने 'राजनीति' पढ़ ली है; मन चुराकर ले गए; मर्यादा नहीं रखी।
- पहले के लोग परहित के लिए दौड़ते थे; राजधर्म है प्रजा को न सताना।

योग के प्रति गोपियों का दृष्टिकोण

योग उनके लिए **नीरस, शुष्क, कड़वा** (करुई ककरी) और ऐसी **व्याधि** है जो न कभी देखी, न सुनी, न भोगी। योग उन लोगों के लिए है जिनका मन **अस्थिर** है; गोपियों का मन तो कृष्ण में स्थिर है। उनके लिए **प्रेम-मार्ग** ही श्रेष्ठ है।

अलंकार-सूची (एक नज़र में)

पंक्ति	अलंकार
गुर चाँटी ज्यों पागी	उपमा

ज्यों करुई ककरी	उपमा
प्रीति-नदी, सनेह तगा	रूपक
हमारैं हरि हारिल की लकरी	रूपक, अनुप्रास
पुरइनि पात रहत जल भीतर	अनुप्रास, दृष्टांत
कान्ह-कान्ह, सुनि-सुनि	पुनरुक्ति प्रकाश
बिरहिनि बिरह दही	अनुप्रास
तुम हौ अति बड़भागी	व्यंग्य (वक्रोक्ति)

गोपियों का वाक्-चातुर्य (वाग्विदग्धता)

- **व्यंग्यात्मकता:** 'बड़भागी', 'राजनीति पढ़ि आए'।
- **तर्कशीलता:** योग अस्थिर मन वालों के लिए; राजधर्म का तर्क।
- **सटीक उदाहरण:** कमल-पत्ता, तेल की गगरी, गुड़-चींटी, हारिल, ककड़ी।
- **निर्भीकता और स्पष्टता:** ज्ञानी उद्धव को निरुत्तर कर देना।
- **सहृदयता और प्रेम की सच्चाई:** यही उनकी शक्ति है।

भाषा-शैली

सरस, मधुर **ब्रजभाषा**; **गेय पद शैली** (राग-रागिनी में गाने योग्य); अंत में कवि की **छाप** ('सूरदास', 'सूर'); **वियोग शृंगार रस**; **माधुर्य गुण**; उपालंभ (उलाहना) और व्यंग्य; लोक-जीवन से लिए उपमान (ककड़ी, गुड़-चींटी, मटकी)।

याद रखें ✎ भ्रमरगीत में **सगुण भक्ति (प्रेम)** की **निर्गुण (ज्ञान, योग)** पर विजय दिखाई गई है।

NCERT प्रश्न-अभ्यास, पूरी तरह हल

1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर: गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' कहती हैं, पर उनका आशय उलटा है। उद्धव सदा कृष्ण के पास रहे, फिर भी उनके प्रेम से **अछूते** रहे; उनका मन कभी किसी के प्रेम में नहीं लगा। जो व्यक्ति कृष्ण जैसे प्रेममय के साथ रहकर भी प्रेम का आनंद न ले सके, वह वास्तव में **भाग्यहीन** है। इस प्रकार 'भाग्यवान' कहकर गोपियाँ उद्धव को प्रेम से वंचित, अभागा बता रही हैं।

2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर: उद्धव के व्यवहार की तुलना (1) **कमल के पत्ते** से की गई है, जो जल में रहकर भी उस पर पानी का दाग नहीं लगने देता, और (2) **तेल की गगरी (मटकी)** से, जिसे जल में डुबोने पर भी उस पर पानी की एक बूँद नहीं ठहरती। उसी प्रकार उद्धव कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम से अप्रभावित रहे।

3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर: गोपियों ने उद्धव को कई उलाहने दिए: (1) तुम **कमल के पत्ते** और **तेल की गगरी** के समान प्रेम से अछूते रहे; (2) तुमने **प्रेम की नदी** में पैर तक नहीं डुबोया, तुम्हारी आँखें किसी के रूप पर नहीं रीझीं; (3) तुम्हारा योग हमें **कड़वी ककड़ी** जैसा लगता है, यह एक **व्याधि** है; (4) यह योग उन्हें दो जिनके मन **चकरी** जैसे अस्थिर हैं; (5) तुम्हारे योग-संदेश ने हमारी विरहाग्नि भड़का दी; (6) कृष्ण ने **राजनीति** पढ़ ली है, उनकी चतुराई बढ़ गई है; (7) पहले के लोग भले थे जो परहित के लिए दौड़ते थे।

4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर: गोपियाँ इस आशा में विरह की व्यथा सह रही थीं कि कृष्ण निर्धारित **अवधि** पर लौट आएँगे; यही आशा उनके जीवन का आधार थी। पर कृष्ण स्वयं न आए और उद्धव के हाथ **योग का संदेश** भेज दिया, जिसमें कृष्ण को भूलकर निर्गुण ब्रह्म की साधना करने को कहा गया था। इससे उनकी आशा टूट गई; जिनसे वे रक्षा की पुकार करना चाहती थीं, वहीं से योग की धारा बह आई। इस प्रकार योग-संदेश ने उनकी विरहाग्नि को और भड़का दिया: 'अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही'।

5. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर: यहाँ **प्रेम की मर्यादा** की बात है। प्रेम की मर्यादा यह है कि प्रेम का बदला प्रेम से दिया जाए और प्रिय से किया वचन निभाया जाए। कृष्ण ने लौटकर आने का वचन नहीं निभाया और प्रेम के बदले **योग का संदेश** भेज दिया; इस प्रकार उन्होंने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी। इसलिए गोपियाँ कहती हैं कि अब वे भी धैर्य (और लोक-लाज) क्यों रखें।

6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर: गोपियों ने कहा कि वे कृष्ण-प्रेम में वैसे ही लिपटी हैं जैसे **चींटी गुड़ से** चिपट जाती है। कृष्ण उनके लिए **हारिल की लकड़ी** हैं, जिन्हें उन्होंने मन, कर्म, वचन से हृदय में दृढ़ता से पकड़ रखा है। वे जागते, सोते, सपने में, दिन-रात **'कान्ह-कान्ह'** रटती रहती हैं। कृष्ण के सामने योग उन्हें **कड़वी ककड़ी** लगता है। उनका मन कृष्ण के पास है, इसलिए किसी और मार्ग की बात भी उन्हें स्वीकार नहीं।

7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर: गोपियों ने कहा कि योग की शिक्षा उन लोगों को दी जाए जिनका मन **'चकरी'** (चकई, फिरकी) के समान **चंचल और अस्थिर** हो, जो किसी एक के प्रति स्थिर न रह पाता हो। गोपियों का मन तो कृष्ण में स्थिर है, इसलिए उन्हें योग की आवश्यकता नहीं।

8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर: गोपियों की दृष्टि में योग-साधना **नीरस, शुष्क और व्यर्थ** है। योग का नाम सुनते ही उन्हें ऐसा लगता है जैसे **कड़वी ककड़ी** खा ली हो। वे योग को ऐसी **व्याधि** मानती हैं जिसे उन्होंने न देखा, न सुना, न भोगा। उनका मानना है कि योग की जरूरत उन्हें है जिनका मन अस्थिर है। उनके लिए प्रेम-मार्ग (सगुण भक्ति) ही सच्चा मार्ग है; योग-संदेश ने तो उनकी विरह-वेदना ही बढ़ाई है।

9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर: गोपियों के अनुसार राजा का धर्म है कि वह **प्रजा को न सताए**, उस पर अन्याय न करे और दूसरों को अन्याय से मुक्त कराए: 'राज धर्म तो यह 'सूर', जो प्रजा न जाहि सताए'। जो दूसरों को अनीति से छुड़ाता है, उसे स्वयं अनीति नहीं करनी चाहिए।

10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर: गोपियों को लगा कि मथुरा जाकर कृष्ण बदल गए हैं: (1) उन्होंने **राजनीति** पढ़ ली है, पहले से चतुर थे, अब और चतुर हो गए; (2) स्वयं आने के बजाय उद्धव के हाथ **योग-संदेश** भेज दिया; (3) प्रेम की **मर्यादा** नहीं निभाई; (4) अब वे गोपियों पर **अनीति** (अन्याय) कर रहे हैं। इसलिए गोपियाँ कहती हैं कि अब वे अपना वह मन वापस पा लेंगी जो कृष्ण जाते समय चुरा ले गए थे।

11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर: (1) **व्यंग्यात्मकता:** 'बड़भागी' कहकर भाग्यहीन बताना, 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए'। (2) **तर्कपूर्णता:** योग अस्थिर मन वालों के लिए है; राजा का धर्म प्रजा को न सताना। (3) **सटीक उदाहरण और उपमाएँ:** कमल का पत्ता, तेल की गगरी, गुड़-चींटी, हारिल की लकड़ी, कड़वी ककड़ी। (4) **स्पष्टवादिता और निर्भीकता:** ज्ञानी उद्धव के सामने बिना झिझक अपनी बात कहना। (5) **भावुकता और सच्चाई:** कृष्ण के प्रति सच्चे प्रेम की अनुभूति उनके हर शब्द में है। इन्हीं गुणों से उद्धव निरुत्तर हो गए।

12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: (1) **भ्रमर** को माध्यम बनाकर उद्धव पर **व्यंग्य और उपालंभ**। (2) **सगुण भक्ति (प्रेम)** की **निर्गुण (योग, ज्ञान)** पर विजय। (3) गोपियों के **एकनिष्ठ प्रेम** और **विरह-वेदना** (वियोग शृंगार) का मार्मिक चित्रण। (4) गोपियों का **वाक्चातुर्य**, तर्क और भोलापन। (5) **लोकधर्मिता:** राजधर्म का संदेश। (6) सरस **ब्रजभाषा**, गेय पद शैली, लोक-जीवन से लिए उपमान, अनुप्रास, उपमा, रूपक आदि अलंकार।

रचना और अभिव्यक्ति

13. गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उत्तर: (1) प्रेम हृदय का विषय है और योग बुद्धि का; जिस हृदय में कृष्ण बसे हैं, वहाँ निर्गुण ब्रह्म के लिए स्थान कहाँ? (2) हम तो सीधी-सादी ग्वालिन हैं, योग की कठिन साधना हम कैसे समझेंगी? (3) यदि कृष्ण को योग ही सिखाना था तो वे स्वयं आकर समझाते; दूसरे को भेजना ही प्रेम का अपमान है। (4) उद्धव, तुमने कभी प्रेम किया ही नहीं, तो तुम प्रेम की पीड़ा का इलाज कैसे बता सकते हो? (5) जो कृष्ण स्वयं रास रचाते, माखन चुराते थे, वे आज निराकार की बात क्यों करें?

14. उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?

उत्तर: गोपियों के पास कृष्ण के प्रति **सच्चे, निश्छल और एकनिष्ठ प्रेम** की शक्ति थी। उनका प्रेम अनुभव से उपजा था, किताबी ज्ञान से नहीं। इसी प्रेम और **आत्मविश्वास** ने उन्हें निर्भीक बना दिया। सच्ची अनुभूति से निकली बातें इतनी तर्कपूर्ण और मार्मिक थीं कि ज्ञानी उद्धव भी निरुत्तर हो गए।

15. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव के माध्यम से **योग-संदेश** भेजा; यह गोपियों को **चतुराई और छल** लगा, जैसा राजनीति में होता है। इसलिए उन्होंने कहा कि हरि राजनीति पढ़ आए हैं। **समकालीन राजनीति में:** हाँ, आज भी अनेक नेता चुनाव के समय जनता से बड़े-बड़े वादे करते हैं और जीतने के बाद उन्हें भूल जाते हैं; स्वयं जनता के बीच न आकर प्रतिनिधियों के माध्यम से संदेश भेजते हैं; अपने स्वार्थ के लिए जनता को भ्रम में रखते हैं। गोपियों की यह बात कि राजा को प्रजा को नहीं सताना चाहिए, आज के लोकतंत्र में भी उतनी ही सच है।

पाठेतर सक्रियता (संकेत)

वाक्चातुर्य वाले चरित्र: **बीरबल, तेनालीराम, गोपाल भाँड़, मुल्ला नसीरुद्दीन**। अपने प्रिय चरित्र के 3-4 किस्से चित्रों सहित एक एलबम में लगाएँ; हर किस्से के नीचे लिखें कि उसमें कौन-सी चतुराई दिखाई गई। सूर के पदों को लय और ताल के साथ गाकर रिकॉर्ड करें।

अतिरिक्त प्रश्न (परीक्षा-शैली, 2 अंक)

1. 'प्रीति-नदी में पाऊँ न बोर्यौ' से गोपियाँ क्या कहना चाहती हैं?

उत्तर: उद्धव ने कभी प्रेम का अनुभव ही नहीं किया; उन्होंने प्रेम रूपी नदी में पैर तक नहीं डुबोया, यानी प्रेम को छुआ तक नहीं। इसीलिए वे प्रेम की पीड़ा नहीं समझते और गोपियों को योग का उपदेश दे रहे हैं।

2. गोपियों ने स्वयं को 'अबला' और 'भोरी' क्यों कहा?

उत्तर: वे स्वयं को ज्ञानी उद्धव की तुलना में भोली-भाली, सीधी-सादी नारियाँ मानती हैं जिन्हें योग जैसे कठिन ज्ञान की समझ नहीं। वे कृष्ण-प्रेम में ऐसी लिपट गई हैं कि अब छूट नहीं सकतीं; 'अबला' कहकर वे अपनी विवशता भी प्रकट करती हैं। इसमें विनम्रता के साथ हल्का व्यंग्य भी है।

3. 'चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: गोपियाँ जिन कृष्ण से अपनी विरह-व्यथा से रक्षा की पुकार लगाना चाहती थीं, उन्हीं कृष्ण ने योग-संदेश की प्रबल धारा भेज दी। अर्थात् रक्षक ही पीड़ा देने वाला बन गया; इससे उनकी आशा टूट गई।

4. 'अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए' में गोपियों का कौन-सा भाव है?

उत्तर: कृष्ण मथुरा जाते समय गोपियों का मन चुरा ले गए थे। अब उनके व्यवहार (योग-संदेश, छल) से आहत गोपियाँ कहती हैं कि वे अपना मन वापस ले लेंगी। इसमें **उलाहना, रूठना और आहत प्रेम** का भाव है; यह कृष्ण पर व्यंग्य भी है।

5. सूरदास के पदों में 'लोकधर्मिता' कैसे दिखाई देती है?

उत्तर: चौथे पद के अंत में गोपियाँ कृष्ण को याद दिलाती हैं कि राजा का धर्म प्रजा को न सताना है और जो दूसरों को अन्याय से छुड़ाता है उसे स्वयं अन्याय नहीं करना चाहिए। प्रेम-प्रसंग के बीच जन-कल्याण की यह सीख सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाती है।

CBSE बोर्ड प्रश्न 2024–2026, हल सहित

16 प्रश्न-पत्रों (2024: 3/1/1–3/5/1, 2025: 3/1/1–3/6/1, 2026: 3/1/1–3/5/1) में इस पाठ से पूछे गए सभी प्रश्न, CBSE अंक-योजना के अनुसार उत्तर सहित।

A. पठित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पी प्रश्न (5 × 1)

CBSE 2025 · 3/2/1 और 3/5/1 निम्नलिखित पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनिए।

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए। / समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए। / इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए। / बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए। / ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए। / अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए। / ते क्यों अनीति करें आपुन, जे और अनीति छुड़ाए। / राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।।

- 3/2/1:** (i) प्रस्तुत पद में 'राजनीति' का प्रयोग हुआ है: (A) चतुराई के अर्थ में (B) अच्छे कर्मों के उदाहरण में (C) कर्तव्यपालन के अर्थ में (D) कृष्ण की प्रशंसा के संदर्भ में
- (ii) गोपियों के द्वारा 'मधुकर' किसे कहा जा रहा है? (A) कृष्ण को (B) भ्रमर को (C) उद्धव को (D) हरि को
- (iii) कथन: गोपियाँ पहले के लोगों को भला कह रही हैं। कारण: वे लोग इधर-उधर डोलते-दौड़ते रहते थे। (A) कथन गलत, कारण सही (B) कथन सही, कारण गलत (C) दोनों सही, कारण उचित व्याख्या (D) दोनों गलत
- (iv) इस पद में गोपियों ने श्रीकृष्ण पर कौन-कौन से आक्षेप लगाए हैं? I. उन्होंने राजनीति सीख ली है। II. पहले से ही चतुर थे, अब तो बड़े-बड़े ग्रंथ भी पढ़ लिए। III. योग-संदेश भेजने का अर्थ है कि उनकी चालाकी और बढ़ गई है। (A) I और II (B) I और III (C) I, II और III (D) II और III
- (v) 'राजधर्म' क्या है? (A) स्वयं अन्याय करना (B) दूसरों के अन्याय को रोकना (C) प्रजा को न सताना (D) गोपियों को योग-संदेश भिजवाना

[5]

उत्तर: (i) (A) चतुराई के अर्थ में

(ii) (C) उद्धव को (गोपियाँ भौरों के बहाने उद्धव को 'मधुकर' कहती हैं)

(iii) (B) कथन सही है, परंतु कारण गलत है (पहले के लोग दूसरों के हित के लिए दौड़ते थे, यूँ ही इधर-उधर नहीं)

(iv) (C) I, II और III तीनों

(v) (C) प्रजा को न सताना

- 3/5/1** (उसी पद पर): (क) गोपियों द्वारा कृष्ण को राजनीतिज्ञ क्यों कहा गया? (A) अपनों का अच्छे से ख्याल रखने के कारण (B) प्रेम में छल-कपटपूर्ण व्यवहार करने के कारण (C) कृष्ण के राजनीति संबंधी गहन ज्ञान के कारण (D) कृष्ण के एक आदर्श राजा होने के कारण
- (ख) 'इक अति चतुर' पंक्ति के माध्यम से गोपियों द्वारा श्रीकृष्ण पर _____ किया गया है। (A) कटाक्ष (B) उपहास (C) प्रशंसा (D) निंदा
- (ग) काव्यांश में 'मधुकर' के माध्यम से किसकी ओर संकेत किया गया है? (A) भौरे की ओर (B) उद्धव की ओर (C) कृष्ण की ओर (D) योग की ओर
- (घ) गोपियों को छलपूर्ण क्या प्रतीत होता है? (A) उद्धव का कृष्ण के प्रति प्रेम (B) कृष्ण का राजनीति में प्रवेश (C) उद्धव और कृष्ण की मित्रता (D) कृष्ण का उनके प्रति व्यवहार
- (ङ) कथन: गोपियाँ उद्धव से व्यंग्यपूर्ण बातें करती हैं। कारण: उद्धव के प्रति मित्रवत एवं आत्मवत भाव के कारण गोपियों की ये सहज अभिव्यक्ति है। (A) कथन गलत, कारण सही (B) दोनों गलत (C) कथन सही और कारण सही व्याख्या (D) कथन सही किंतु कारण सही व्याख्या नहीं [5]

उत्तर: (क) (B) प्रेम में छल-कपटपूर्ण व्यवहार करने के कारण

(ख) (A) कटाक्ष

(ग) (B) उद्धव की ओर

(घ) (D) कृष्ण का उनके प्रति व्यवहार

(ङ) (D) कथन सही है किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है (व्यंग्य का कारण उद्धव का शुष्क योग-संदेश है)।

CBSE 2025 · 3/6/1 पठित काव्यांश पढ़कर विकल्प चुनिए।

हमारैं हरि हारिल की लकरी। / मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी। / जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी। / सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी / सु तौ ब्याधि हमको लै आए, देखी सुनी न करी / यह तौ 'सूर' तिनहि लै सौपौ, जिनके मन चकरी।।

- (क) गोपियों के अनुसार उद्धव द्वारा किन लोगों को योग की शिक्षा दी जानी चाहिए? (A) जिनके मन में कृष्ण के प्रति भक्ति हो (B) जो योग के बारे में जानना चाहते हों (C) जो भक्ति मार्ग को हृदय से अपनाना चाहते हों (D) जिनका मन कृष्ण के प्रति स्थिर न हो
- (ख) 'हारिल' और 'हारिल की लकड़ी' किनके प्रतीक हैं? (A) कृष्ण – कृष्ण (B) कृष्ण – गोपियाँ (C) गोपियाँ – कृष्ण (D) कृष्ण – उद्धव
- (ग) पद्यांश में व्याधि किसे बताया गया है? (A) कृष्ण के मित्र उद्धव को (B) उद्धव के बताए योग को (C) कटुक स्वाद वाली ककड़ी को (D) कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम को
- (घ) काव्यांश के संदर्भ में सही विकल्प: (A) गोपियाँ दिन-रात कृष्ण के नाम का जप करती रहती हैं। (B) गोपियाँ उद्धव को भी योग त्यागने की सलाह देती हैं। (C) गोपियाँ उद्धव को भी भक्ति मार्ग अपनाने को कहती हैं। (D) गोपियाँ कृष्ण से प्रेम करके बहुत पछता रही हैं।
- (ङ) कथन: गोपियाँ कृष्ण के प्रति अपने अगाध प्रेम के कारण भ्रमित थीं। कारण: प्रेम और विश्वास की गहराई से व्यक्ति में सूझ-बूझ की कमी हो जाती है। (A) कथन गलत, कारण सही (B) दोनों गलत (C) दोनों सही, कारण सही व्याख्या (D) कथन सही, कारण सही व्याख्या नहीं [5]

उत्तर: (क) (D) जिनका मन कृष्ण के प्रति स्थिर न हो (जिनके मन चकरी)

(ख) (C) गोपियाँ – कृष्ण (गोपियाँ हारिल हैं, कृष्ण लकड़ी)

(ग) (B) उद्धव के बताए योग को

(घ) (A) गोपियाँ दिन-रात कृष्ण के नाम का जप करती रहती हैं।

(ङ) (B) कथन और कारण दोनों ही गलत हैं (गोपियाँ भ्रमित नहीं, प्रेम में दृढ़ और तर्कपूर्ण हैं)।

CBSE 2024 · 3/3/1

सूरदास के पदों में उद्धव की तुलना किससे **नहीं** की गई है? (A) तेल की गगरी (B) हारिल पक्षी की लकड़ी (C) मधुकर (D) कमलपात (कमल-पात)

[1]

उत्तर: (B) हारिल पक्षी की लकड़ी (यह तुलना कृष्ण की है)।

CBSE 2026 · 3/1/1

पठित काव्यांश पढ़कर विकल्प चुनिए।

ऊधौ! तुम हौ अति बड़भागी। / अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी। / पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी। / ज्यों जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी। / प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्खौ, दृष्टि न रूप परागी। / 'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यों पागी।।

- (i) 'ज्यों जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।' पंक्ति के द्वारा क्या स्पष्ट होता है? (A) श्रीकृष्ण का मन प्रेम से अछूता रहा। (B) उद्धव का मन प्रेम से अछूता रहा। (C) गोपियाँ प्रेम रूपी रस से अछूती रहीं। (D) तेल से युक्त मटकी पर जल का प्रभाव नहीं होता।
- (ii) कृष्ण-प्रेम में डूबी गोपियों की तुलना किससे की गई है? I. कमल के पत्ते से II. जल में पड़े तेल चुपड़े घड़े से III. गुड़ से चिपटी चींटियों से (A) केवल III (B) केवल I (C) I और III (D) II और III
- (iii) प्रस्तुत पद के आधार पर सूरदास के काव्य के बारे में कहा जा सकता है: I. सहज उपमाओं द्वारा गूढ़ भाव व्यक्त किए गए हैं। II. उनके काव्य में केवल दार्शनिक चिंतन है। III. उनका काव्य बहुत अधिक अलंकृत और सजावटी है। IV. योग साधना से अधिक कृष्ण-प्रेम को महत्त्व दिया गया है। (A) I और II (B) III और IV (C) II और III (D) I और IV
- (iv) कथन: गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' कहते हुए वास्तव में 'भाग्यहीन' बता रही हैं। कारण: वे योग का संदेश लेकर आए हैं। (A) कथन सही, कारण गलत (B) दोनों गलत (C) दोनों सही, कारण उचित व्याख्या (D) दोनों सही, कारण उचित व्याख्या नहीं
- (v) गोपियों के अनुसार 'कृष्ण' किसके समान हैं? (A) प्रेम-भाव से भरी नदी के समान (B) स्नेह के स्पर्श से भी दूर (C) कमल के पत्तों सरीखे (D) अनुरागी मन वाले 'बड़भागी'

[5]

उत्तर: (i) (B) उद्धव का मन प्रेम से अछूता रहा।

(ii) **(A)** केवल III सही है (गुर चाँटी ज्यों पागी; कमल-पत्ता और तेल की गगरी उद्धव के लिए हैं)।

(iii) **(D)** I और IV सही हैं।

(iv) **(D)** कथन और कारण दोनों सही हैं परंतु कारण कथन की उचित व्याख्या नहीं है (भाग्यहीन इसलिए कि वे प्रेम से वंचित रहे)।

(v) **(A)** प्रेम-भाव से भरी नदी के समान ('प्रीति-नदी')।

CBSE 2026 · 3/2/1

पठित काव्यांश पढ़कर विकल्प चुनिए।

मन की मन ही माँझ रही। / कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नहीं परत कही। / अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही। / अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही। / चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही। / 'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यों, मरजादा न लही।।

- (i) गोपियों की अभिलाषाएँ मन में ही क्यों रह गई? (A) सांसारिक लोक-लाज के कारण (B) कृष्ण के मथुरा गमन के कारण (C) कृष्ण के स्थान पर उद्धव के आने के कारण (D) प्रेमाभिव्यक्ति के लिए उचित शब्द न मिलने के कारण
- (ii) योग-संदेश को सुन गोपियों की क्या दशा हुई? (A) दुख कुछ कम हुआ (B) कृष्ण के आने की उम्मीद को बल मिला (C) गोपियाँ मानो विरह के दुख से जल उठीं (D) दुखी हो कृष्ण को पुकारने लगीं
- (iii) कथन: गोपियाँ उद्धव के समक्ष अपनी विरह व्यथा कह रही हैं। कारण: उद्धव श्रीकृष्ण द्वारा भेजे गए उनके दूत हैं। (A) कथन सही, कारण गलत (B) दोनों गलत (C) दोनों सही, कारण उचित व्याख्या (D) दोनों सही, कारण उचित व्याख्या नहीं
- (iv) मर्यादा का पालन किसने नहीं किया? (A) कृष्ण ने (B) उद्धव ने (C) गोपियों ने (D) सूरदास ने
- (v) गोपियों ने अब तक धीरज क्यों धारण कर रखा था? I. प्रेम की मर्यादा का पालन करते हुए II. कृष्ण के लौटकर आने की उम्मीद में III. समाज के नियमों को ध्यान में रखकर (A) I और III (B) II और III (C) I और II (D) I, II और III

[5]

- उत्तर:** (i) (C) कृष्ण के स्थान पर उद्धव के आने के कारण
(ii) (C) गोपियाँ मानो विरह के दुख से जल उठीं (बिरहिनि बिरह दही)
(iii) (C) दोनों सही हैं और कारण, कथन की उचित व्याख्या करता है
(iv) (A) कृष्ण ने
(v) (C) केवल I और II सही हैं

CBSE 2024 · 3/2/1

- उसी पद (मन की मन ही माँझ रही) पर: (i) गोपियों को अपना धैर्य टूटता हुआ-सा क्यों लग रहा था? (A) विरहाग्नि के और बढ़ जाने के कारण (B) उद्धव के योग ज्ञान को सुन-सुनकर (C) उद्धव के धीरज से प्रभावित होकर (D) अपने प्रति कृष्ण के शुष्क व्यवहार से
- (ii) 'सूरदास' के इस 'पद' की भाषा है: (A) ब्रज भाषा (B) अवधी भाषा (C) पूरबी बोली (D) मिश्रित भाषा
- (iii) गोपियाँ अब तक व्यथा को कैसे सहन कर रही थीं? (A) एक-दूसरे के दुःख के सहारे (B) अतीत की मधुर स्मृतियों के सहारे (C) कृष्ण के आने की आस में (D) ज्ञान के मार्ग का अनुसरण करके
- (iv) सूरदास के 'पद' के अनुसार किसके मन की, कौन सी बात मन में ही रह गई? (A) उद्धव की, ज्ञान देने की (B) कृष्ण की, संदेश भेजने की (C) गोपियों की, कृष्ण से मिलन की (D) उद्धव की, कृष्ण से भक्ति की
- (v) गोपियों की विरहाग्नि और अधिक प्रदीप्त क्यों हो जाती है? (A) कृष्ण के संदेश भेजने से (B) उद्धव के आ जाने से (C) उद्धव के योग-संदेश से (D) गोपियों के परस्पर दुःख से

[5]

- उत्तर:** (i) (D) अपने प्रति कृष्ण के शुष्क व्यवहार से (अंक-योजना के अनुसार)
(ii) (A) ब्रज भाषा
(iii) (C) कृष्ण के आने की आस में
(iv) (C) गोपियों की, कृष्ण से मिलन की
(v) (C) उद्धव के योग-संदेश से

B. लघु उत्तरीय प्रश्न (2 अंक, 25-30 शब्द)

CBSE 2024 · 3/1/1

सूरदास के 'पद' के अनुसार गोपियों को ऐसा क्यों लगा कि कृष्ण ने राजनीति पढ़ ली है?

उत्तर: कृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव के द्वारा योग-संदेश भेज दिया। प्रेम के बदले योग भेजना और प्रेम की मर्यादा का पालन न करना गोपियों को चतुराई और छल लगा, जैसा राजनीति में होता है। [2]

इसलिए उन्हें लगा कि कृष्ण राजनीति पढ़ आए हैं।

CBSE 2024 · 3/4/1 उद्धव ने गोपियों को समझाने के लिए कौन-सा उपदेश दिया और गोपियों को वह पसंद क्यों नहीं आया? [2]

उत्तर: उद्धव ने गोपियों को **योग और निर्गुण ब्रह्म** का उपदेश दिया। गोपियों को वह पसंद नहीं आया क्योंकि उनका कृष्ण के प्रति **एकनिष्ठ प्रेम और समर्पण** था; यह संदेश उन्हें **शुष्क, नीरस और कड़वी ककड़ी** जैसा लगा, जिसने उनकी विरह-वेदना और बढ़ा दी।

CBSE 2024 · 3/5/1 सूरदास की गोपियों ने उद्धव को 'बड़भागी' किस उद्देश्य से कहा है? [2]

उत्तर: गोपियों ने उद्धव को 'बड़भागी' **व्यंग्य** करने के उद्देश्य से कहा है। उद्धव **श्रीकृष्ण के निकट रहते हुए भी प्रेम की अनुभूति से वंचित** रहे, जैसे कमल का पत्ता जल में रहकर भी गीला नहीं होता। ऐसा व्यक्ति वास्तव में भाग्यहीन है।

CBSE 2025 · 3/3/1 सूरदास की गोपियों की वाक्-चातुर्य को किन्हीं दो उदाहरणों से स्पष्ट कीजिए। [2]

उत्तर: (1) उद्धव को '**बड़भागी**' (**भाग्यवान**) कहकर वास्तव में उन्हें **भाग्यहीन** सिद्ध करना, क्योंकि वे कृष्ण के पास रहकर भी प्रेम से अछूते रहे। (2) कृष्ण को '**राजनीति पढ़ि आए**' कहकर उनके छलपूर्ण व्यवहार की ओर संकेत करना; साथ ही योग को **चकरी जैसे अस्थिर मन** वालों के लिए ठीक बताना।

CBSE 2026 · 3/3/1 योग-संदेश पाकर गोपियों की क्या मनोदशा हुई? उनकी भावनाओं को दो बिंदुओं में लिखिए। [2]

उत्तर: (1) गोपियों की **विरह-व्यथा और बढ़ गई**; वे मानो विरह की आग में जल उठीं (बिरहिनि बिरह दही)। (2) कृष्ण से **मिलन की आशा टूट गई**; वे निराश, विवश और अत्यंत दुखी हो गईं तथा कृष्ण से शिकायत करने लगीं कि उन्होंने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी।

CBSE 2026 · 3/4/1 सूरदास द्वारा रचित 'पद' में 'गुर चाँटी ज्यों पागी' कहने से गोपियों की किस मनोदशा की अभिव्यक्ति होती है? [2]

उत्तर: इससे गोपियों के कृष्ण के प्रति **अनन्य, निश्छल, दृढ़ और एकनिष्ठ प्रेम** की अभिव्यक्ति होती है। जैसे चींटी गुड़ से चिपटकर फिर छूट नहीं पाती, वैसे ही गोपियाँ कृष्ण-प्रेम में **पूर्ण समर्पण** के साथ लिपटी हैं; उनका उनसे अलग होना असंभव है।

CBSE 2026 · 3/5/1 गोपियाँ उद्धव की बातें सुनकर निराश क्यों हो गईं? 'सूरदास के पद' के आधार पर लिखिए। [2]

उत्तर: गोपियाँ कृष्ण के लौट आने की आशा में विरह सह रही थीं। पर उद्धव ने **प्रेम-संदेश के स्थान पर योग-संदेश** सुनाया। इससे **कृष्ण के आगमन की आशा धूमिल** हो गई और उनकी **विरह-व्यथा बढ़ गई**; इसलिए वे निराश हो गईं।

बोर्ड ने क्या पूछा (16 प्रश्न-पत्र, 2024-2026)

प्रकार	2024	2025	2026	कुल
काव्यांश (5 MCQ)	1	3	2	6
एकल MCQ (1 अंक)	1	0	0	1
लघु उत्तरीय (2 अंक)	3	1	3	7
कुल	5	4	5	14

पद	काव्यांश के रूप में
पद 1 (ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी)	2026

पद 2 (मन की मन ही माँझ रही)	2024, 2026
पद 3 (हमारैं हरि हारिल की लकरी)	2025
पद 4 (हरि हैं राजनीति पढ़ि आए)	2025 (दो प्रश्न-पत्र)

★ **परीक्षा-सुझाव:** 2 अंक के उत्तर में **दो अलग बिंदु** लिखें; अंक-योजना हर बिंदु पर 1 अंक देती है। एक बिंदु पर केवल आधा या एक अंक मिलता है।

बार-बार पूछे गए विषय: 'बड़भागी' का व्यंग्य · 'राजनीति' का अर्थ · 'मधुकर' = उद्धव · योग-संदेश से विरह बढ़ना · 'मरजादा न लही' (कृष्ण ने) · हारिल की लकड़ी (कृष्ण) · राजधर्म (प्रजा को न सताना) · गोपियों का वाक्चातुर्य।

त्वरित दोहराव (Quick-reference)

प्रश्न	उत्तर
भ्रमरगीत किस ग्रंथ से?	सूरसागर
सूरदास के गुरु	वल्लभाचार्य; अष्टछाप के कवि
भाषा	ब्रजभाषा
रस	वियोग (विप्रलंभ) शृंगार
मधुकर/भ्रमर	उद्धव
उद्धव = कमल-पत्ता, तेल की गगरी	प्रेम से अछूते
गोपियाँ = गुड़ से चिपटी चींटी	कृष्ण-प्रेम में लीन
कृष्ण = हारिल की लकड़ी	गोपियों का एकनिष्ठ प्रेम
योग = करुई ककरी, ब्याधि	नीरस, पीड़ादायक
योग किसे दें?	जिनके मन चकरी (अस्थिर)
मरजादा किसने नहीं रखी?	कृष्ण ने (प्रेम की मर्यादा)
राजधर्म	प्रजा को न सताना

काव्यांश अभ्यास (उत्तर अध्याय के अंत में)

सेट 1.

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी। / अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी। / पुरइनि पात रहत जल भीतर,
ता रस देह न दागी।

- (i) 'अपरस' का अर्थ है: (A) स्पर्श किया हुआ (B) अछूता (C) रसीला (D) सुंदर (ii) 'सनेह तगा' में अलंकार: (A) उपमा (B) रूपक (C) यमक (D) श्लेष (iii) 'पुरइनि पात' किसका प्रतीक है? (A) गोपियों का (B) कृष्ण का (C) उद्धव का (D) योग का (iv) 'बड़भागी' कहने में निहित भाव: (A) प्रशंसा (B) व्यंग्य (C) करुणा (D) भय

सेट 2.

सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी। / सु तौ ब्याधि हमकों लै आए, देखी सुनी न करी। / यह तौ 'सूर'
तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

- (i) योग गोपियों को कैसा लगता है? (A) मीठा (B) कड़वी ककड़ी जैसा (C) सरल (D) उपयोगी (ii) 'ब्याधि' शब्द किसके लिए आया है? (A) विरह (B) कृष्ण (C) योग (D) ककड़ी (iii) 'ज्यों करुई ककरी' में अलंकार: (A) रूपक (B) उत्प्रेक्षा (C) उपमा (D) अनुप्रास (iv) 'मन चकरी' का अर्थ: (A) स्थिर मन (B) अस्थिर, चंचल मन (C) प्रसन्न मन (D) दुखी मन

सेट 3.

ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए। / अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए। / ते क्यों अनीति
करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।

- (i) 'आगे के' का अर्थ: (A) भविष्य के (B) पहले के (C) सामने के (D) आगे चलने वाले (ii) गोपियों का मन कौन चुराकर ले गया? (A) उद्धव (B) कंस (C) कृष्ण (D) भौरा (iii) 'अनीति' का अर्थ: (A) नीति (B) अन्याय (C) अज्ञान (D) अधर्म का ग्रंथ (iv) इन पंक्तियों में गोपियों का भाव: (A) प्रशंसा (B) उलाहना (C) भक्ति (D) भय

अभ्यास सेट: स्वयं को परखें परीक्षा-शैली

A. रिक्त स्थान भरिए (1 अंक)

- सूरदास _____ के शिष्य थे।
- सूरदास के पद _____ के भ्रमरगीत से लिए गए हैं।
- गोपियाँ उद्धव को _____ कहकर संबोधित करती हैं।
- उद्धव की तुलना जल में रहने वाले _____ के पत्ते से की गई है।
- गोपियों को योग _____ ककड़ी जैसा लगता है।
- हारिल पक्षी सदा पैरों में _____ लिए रहता है।
- योग उन्हें दो जिनके मन _____ हों।
- राजधर्म है कि _____ को न सताया जाए।

B. सही या गलत (1 अंक)

- कृष्ण स्वयं गोपियों को योग का संदेश देने आए।
- गोपियाँ ज्ञान-मार्ग को प्रेम-मार्ग से श्रेष्ठ मानती हैं।
- 'हारिल की लकड़ी' कृष्ण के लिए प्रयुक्त है।
- योग-संदेश से गोपियों का विरह शांत हो गया।
- सूरदास की भाषा अवधी है।
- 'मरजादा न लही' कृष्ण के व्यवहार की ओर संकेत है।

7. गोपियाँ पहले के लोगों को स्वार्थी बताती हैं।
8. सूरसागर सूरदास की सबसे लोकप्रिय रचना है।

C. अति लघु उत्तरीय (1 अंक)

1. सूरदास का जन्म कब माना जाता है?
2. सूरदास किस मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे?
3. 'बोर्यौ' का अर्थ लिखिए।
4. गोपियाँ स्वयं को किसके समान कृष्ण-प्रेम में लिपटा बताती हैं?
5. गोपियाँ किस अवधि के आधार पर व्यथा सह रही थीं?
6. 'जकरी' का अर्थ क्या है?
7. 'पठाए' शब्द का अर्थ लिखिए।
8. भ्रमरगीत का आरंभ किस घटना से होता है?

D. लघु उत्तरीय (2 अंक, 25-30 शब्द)

1. उद्धव 'तेल की गगरी' के समान कैसे हैं?
2. 'अवधि अधार आस आवन की' का भाव स्पष्ट कीजिए।
3. गोपियाँ योग को 'ब्याधि' क्यों कहती हैं?
4. 'हमारैं हरि हारिल की लकरी' में गोपियों का कौन-सा भाव प्रकट हुआ है?
5. गोपियाँ धैर्य क्यों नहीं रख पा रही हैं?
6. 'इक अति चतुर हुते पहिलैं ही' में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए।
7. गोपियाँ उद्धव को 'मधुकर' क्यों कहती हैं?
8. 'ते क्यों अनीति करैं आपुन' से गोपियाँ कृष्ण को क्या याद दिलाती हैं?
9. सूरदास की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।
10. 'प्रीति-नदी' में कौन-सा अलंकार है? स्पष्ट कीजिए।

E. विचारात्मक प्रश्न (3-4 अंक, 50-60 शब्द)

1. गोपियों के प्रेम और उद्धव के ज्ञान की तुलना कीजिए। आपको कौन-सा मार्ग उचित लगता है?
2. भ्रमरगीत में सगुण की निर्गुण पर विजय कैसे दिखाई गई है?
3. सूरदास के पदों के आधार पर गोपियों के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।
4. 'राजधर्म' पर गोपियों का विचार आज के शासकों के लिए कितना प्रासंगिक है?
5. सूरदास के पदों में लोक-जीवन से लिए गए उपमानों का महत्त्व बताइए।
6. 'विरह में भी प्रेम कम नहीं होता, बढ़ता है।' पदों के आधार पर सिद्ध कीजिए।

F. अंतर्पाठीय प्रश्न (3-4 अंक)

1. सूरदास की गोपियों और तुलसीदास के लक्ष्मण, दोनों वाक्यातुर्य में निपुण हैं। दोनों के व्यंग्य की तुलना कीजिए।
2. गोपियों का कृष्ण के प्रति प्रेम और 'बालगोबिन भगत' की कबीर के प्रति भक्ति: दोनों में कौन-सी समानता है?
3. 'यह दंतुरित मुसकान' में वात्सल्य है और सूरदास के पदों में वियोग शृंगार। सूरदास को इन दोनों रसों का श्रेष्ठ कवि क्यों कहा जाता है?
4. 'संगतकार' और 'उद्धव' दोनों संदेशवाहक/सहायक की भूमिका में हैं। दोनों के व्यवहार में क्या अंतर है?

G. उच्च चिंतन (HOTS)

1. यदि कृष्ण स्वयं गोपियों के पास आकर योग का संदेश देते, तो क्या गोपियाँ उसे स्वीकार कर लेतीं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।
2. उद्धव 'ज्ञानी' होकर भी गोपियों से हार गए। इससे ज्ञान और अनुभूति के संबंध के बारे में क्या सीख मिलती है?
3. आज के समय में 'हारिल की लकड़ी' जैसी दृढ़ निष्ठा किन क्षेत्रों में आवश्यक है? दो उदाहरण दीजिए।

4. गोपियाँ भौरे को देखकर उद्धव पर व्यंग्य करती हैं। अपनी बात सीधे न कहकर प्रतीक से कहने का क्या लाभ होता है?

बहुविकल्पी प्रश्न: 20 MCQs

- सूरदास किस संप्रदाय/मंडली के कवि थे?
(A) छायावाद (B) रीतिकाल (C) अष्टछाप (D) प्रगतिवाद
- सूरदास का निधन कहाँ हुआ?
(A) पारसौली (B) मथुरा (C) सीही (D) वृंदावन
- 'भ्रमरगीत' किस ग्रंथ का अंश है?
(A) साहित्य लहरी (B) सूर सारावली (C) रामचरितमानस (D) सूरसागर
- गोपियों के पास संदेश लेकर कौन आए?
(A) बलराम (B) उद्धव (C) अक्रूर (D) नंद
- उद्धव ने गोपियों को किसका उपदेश दिया?
(A) सगुण भक्ति का (B) योग और निर्गुण ब्रह्म का (C) राजनीति का (D) वीरता का
- 'ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी' में 'बड़भागी' का वास्तविक अर्थ है:
(A) सौभाग्यशाली (B) बुद्धिमान (C) धनवान (D) भाग्यहीन
- 'पुरइनि पात' का अर्थ है:
(A) कमल का पत्ता (B) पुराना पत्ता (C) पीपल का पत्ता (D) केले का पत्ता
- 'गुर चाँटी ज्यों पागी' में अलंकार है:
(A) रूपक (B) यमक (C) उपमा (D) श्लेष
- गोपियाँ कृष्ण के लौटने की आस में क्या सह रही थीं?
(A) अपमान (B) भूख (C) लोक-निंदा (D) तन-मन की व्यथा
- 'बिरहिनि बिरह दही' का अर्थ है:
(A) विरहिणी दही बेच रही है (B) विरहिणियाँ विरह की आग में जल रही हैं (C) विरह समाप्त हो गया (D) विरहिणी प्रसन्न है
- 'मरजादा न लही' में किसकी मर्यादा की बात है?
(A) समाज की (B) उद्धव की (C) प्रेम की (जिसे कृष्ण ने नहीं रखा) (D) राजा की
- गोपियों के लिए कृष्ण किसके समान हैं?
(A) हारिल की लकड़ी (B) चकरी (C) कड़वी ककड़ी (D) तेल की गगरी
- 'जक री' का अर्थ है:
(A) जल रही (B) रटती रहती हैं (C) जाग रही (D) रो रही
- गोपियों को योग कैसा लगता है?
(A) मधुर (B) सरल (C) कड़वी ककड़ी जैसा (D) उपयोगी
- गोपियों के अनुसार योग किन्हें देना चाहिए?
(A) ऋषियों को (B) बच्चों को (C) राजाओं को (D) जिनके मन चकरी जैसे अस्थिर हों
- 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए' में 'राजनीति' का अर्थ है:
(A) चतुराई, छल (B) शासन-विद्या (C) युद्ध-कला (D) धर्म-शास्त्र
- 'मधुकर' शब्द किसके लिए प्रयुक्त है?
(A) उद्धव (B) सूरदास (C) कृष्ण (D) नंद
- गोपियों के अनुसार पहले के लोग कैसे थे?
(A) स्वार्थी (B) चतुर (C) आलसी (D) दूसरों के हित के लिए दौड़ने वाले, भले
- सूरदास के अनुसार राजधर्म क्या है?
(A) युद्ध करना (B) प्रजा को न सताना (C) कर वसूलना (D) योग सिखाना
- सूरदास के पदों की भाषा है:
(A) अवधी (B) खड़ी बोली (C) ब्रजभाषा (D) मैथिली

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) कथन और कारण दोनों सही, कारण कथन की सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: गोपियाँ उद्धव को 'बड़भागी' कहती हैं। कारण: उद्धव कृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम से अछूते रहे।
2. कथन: योग-संदेश ने गोपियों का विरह कम कर दिया। कारण: उद्धव ज्ञानी थे।
3. कथन: गोपियाँ अब धैर्य नहीं रख पा रहीं। कारण: कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी।
4. कथन: गोपियाँ कृष्ण को 'हारिल की लकड़ी' मानती हैं। कारण: उन्होंने कृष्ण को मन, कर्म, वचन से दृढ़ता से पकड़ रखा है।
5. कथन: गोपियाँ योग को सरल मार्ग मानती हैं। कारण: योग उन्हें कड़वी ककड़ी जैसा लगता है।
6. कथन: सूरदास के पदों में लोकधर्मिता है। कारण: वे भक्तिकाल के कवि थे।

उत्तर: 1 (A) · 2 (D) · 3 (A) · 4 (A) · 5 (D) · 6 (B)

उत्तर

काव्यांश अभ्यास. सेट 1: (i) B (ii) B (iii) C (iv) B. सेट 2: (i) B (ii) C (iii) C (iv) B. सेट 3: (i) B (ii) C (iii) B (iv) B.

- A.** 1. वल्लभाचार्य 2. सूरसागर 3. मधुकर (भ्रमर) 4. कमल 5. कड़वी (करुई) 6. लकड़ी 7. चकरी (अस्थिर) 8. प्रजा
- B.** 1. गलत (उद्धव को भेजा) 2. गलत (प्रेम-मार्ग श्रेष्ठ) 3. सही 4. गलत (और बढ़ गया) 5. गलत (ब्रजभाषा) 6. सही 7. गलत (भले, परहित करने वाले) 8. सही
- C.** 1. सन् 1478 2. श्रीनाथ जी का मंदिर 3. डुबोया 4. गुड़ से चिपटी चींटी 5. कृष्ण के लौटने की निर्धारित अवधि 6. रटती रहती हैं 7. भेजा 8. एक भौरे के आने से, जिसके बहाने गोपियों ने उद्धव पर व्यंग्य किया
- D.** 1. तेल चुपड़ी गगरी जल में रहकर भी गीली नहीं होती; उद्धव कृष्ण के पास रहकर भी प्रेम से अछूते रहे। 2. कृष्ण के लौटने की तय अवधि ही आधार थी; उसी आशा में तन-मन की पीड़ा सही। 3. वह न कभी देखा, न सुना, न भोगा; पीड़ा देता है, विरह बढ़ाता है। 4. एकनिष्ठ, दृढ़, अनन्य प्रेम; कृष्ण को कभी न छोड़ना। 5. योग-संदेश से आशा टूटी; कृष्ण ने मर्यादा नहीं रखी। 6. कृष्ण पहले से चतुर थे, अब ग्रंथ पढ़कर और चालाक हो गए: कटाक्ष। 7. भौरे के बहाने; भौरे की तरह रस लेकर उड़ जाने वाले, निष्ठुर। 8. जो दूसरों को अन्याय से छुड़ाते हैं, उन्हें स्वयं अन्याय नहीं करना चाहिए; राजधर्म। 9. ब्रजभाषा, गेय पद शैली, व्यंग्य, सहज उपमाएँ (कोई दो)। 10. रूपक: प्रेम पर नदी का आरोप।
- E.** 1. प्रेम हृदय से, अनुभूति से; ज्ञान बुद्धि से; गोपियों का प्रेम उद्धव के ज्ञान पर भारी; अपना मत सकारण। 2. योग नीरस, व्याधि; प्रेम सरस; उद्धव निरुत्तर। 3. प्रेममयी, एकनिष्ठ, वाक्चतुर, निर्भीक, भावुक, तर्कशील। 4. जनता से वादाखिलाफी, अन्याय न हो; नेता जनसेवक बनें। 5. ककड़ी, गुड़-चींटी, मटकी, कमल-पत्ता से गूढ़ भाव सरल और प्रभावी। 6. अवधि की आस, कान्ह-कान्ह रटना, हारिल की लकड़ी, मन वापस लेने की बात भी प्रेम का ही रूप।
- F.** 1. गोपियों का व्यंग्य कोमल, प्रेम से उपजा; लक्ष्मण का व्यंग्य तीखा, वीरता और क्रोध से भरा। 2. दोनों का अनन्य, एकनिष्ठ समर्पण; सब कुछ 'साहब'/कृष्ण का। 3. वात्सल्य (बाल-लीला) और शृंगार (गोपी-प्रेम) दोनों में सहज मानवीय भाव। 4. संगतकार स्वयं को पीछे रखकर मुख्य गायक को सहारा देता है; उद्धव अपने ज्ञान का उपदेश थोपते हैं।
- G.** 1. संभवतः नहीं; उनका मन कृष्ण के रूप में रमा था; तर्क सहित। 2. अनुभूति ज्ञान से बढ़ी; किताबी ज्ञान जीवन के अनुभव के बिना अधूरा। 3. देश-सेवा, खेल, विद्या-साधना आदि। 4. व्यंग्य असरदार और शालीन बनता है, सीधा अपमान नहीं होता।

अंतिम-रात सारांश (परीक्षा से पहले)

- सूरदास: 1478-1583, वल्लभाचार्य के शिष्य, अष्टछाप, ब्रजभाषा; सूरसागर (भ्रमरगीत)।
- कृष्ण ने उद्धव से योग-संदेश भेजा; गोपियाँ भ्रमर (मधुकर) के बहाने उद्धव पर व्यंग्य करती हैं।
- पद 1: 'बड़भागी' = व्यंग्य; उद्धव = कमल-पत्ता, तेल की गगरी; गोपियाँ = गुड़ से चिपटी चींटी।
- पद 2: मन की बात मन में; अवधि की आस; योग-संदेश से विरहाग्नि भड़की; कृष्ण ने मर्यादा नहीं रखी।

- पद 3: कृष्ण = हारिल की लकड़ी; कान्ह-कान्ह रटना; योग = करुई ककरी, ब्याधि; मन चकरी वालों को दो।
- पद 4: राजनीति = चतुराई/छल; पहले के लोग परहित करते थे; मन वापस लेंगी; राजधर्म = प्रजा न सताए।
- अलंकार: उपमा (गुर चाँटी, करुई ककरी), रूपक (प्रीति-नदी, हारिल की लकरी), पुनरुक्ति (कान्ह-कान्ह)।

SAMPLE · notesbazar.in